P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-6* September - 2020
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

लॉक डाउन में महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का विश्लेषण

Analysis of Social and Economic Condition of Women During Lock-Down Period

Paper Submission:15/09/2020, Date of Acceptance: 27/09/2020, Date of Publication: 28/09/2020

मयंक मोहन
विभागाध्यक्ष,
अर्थशास्त्र विभाग
एम0 एम0 कालेज,
मोदीनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

कविता अग्रवाल
शोध छात्रा
समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र
एवं शिक्षाशास्त्र
एम0 एम0 कालेज,
मोदीनगर, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व कोविड–19 से उत्पन्न करोना नाम की एक भयावह बीमारी का सामना कर रहा है। किसी की समझ में नहीं आ रहा है कि ऐसी स्थिति का सामना कैसे किया जाये क्योंकि यदि शत्रु सामने हो तो शायद हम उसका सामना कर भी लें किन्तु यदि वह अदृश्य है तो समस्या अत्यधिक बडी हो जाती है। ऐसा नहीं है कि विश्व की सरकारें इस समस्या का निदान करने के लिये प्रयास न कर रही हों किन्तु समाधान खोजने में कुछ समय लग सकता है। ऐसी स्थिति में सरकार के द्वारा जनता को इस भयानक बीमारी से बचाने के लिये सामयिक परिस्थितियों में लॉक डाउन लगाना पडा जिसका परिणाम यह हुआ कि सभी लोग जो जहाँ थे वहीं कैद हो गये। जैसा कि सामान्य समाज की रीति है कि पुरुष वर्ग दिन भर बाहर कार्य करता है तथा अधिकांश महिलायें घरेलू व्यवस्था को चलाती हैं, वे सब छिन्न–भिन्न हो गयी। समय काटने की समस्या के साथ–साथ आर्थिक समस्याओं के दुष्परिणाम भी सामने आने लगे। एक ओर बीमारी का भय तो दूसरी ओर काम न होना और तीसरा आर्थिक समस्या का होना ये सब बातें एक सामान्य व्यक्ति और उसके परिवार के लिये बहुत बडी समस्या बन गई है। ऐसे में महिलायें जो कि समाज का एक सशक्त वर्ग होती हैं ने शारीरिक, मानसिक और अपनी सामर्थ्यानुसार आर्थिक रूप से भी अपने परिवारों को एक अवलम्बन प्रदान किया है।

During present era the whole world is suffering from Corona disease (Covid –19). Nobody understands how to face this situation. When the enemy is before us, we can face him easily but if he is invisible, then the problem becomes very typical. The governments of whole the world are making their efforts to solve this problem but it can take some time to control it. In this situation our government has to impose lock-down to save the people from this dangerous disease. This resulted that all the people get them hold with immediate effect at the places where they were.

As it is the general practice that the gents do their work outside their houses and most of the women stay at their homes and manage the home affairs, but all this system has fully broken-up during this crucial period. This resulted that the consequences of time passing problem and economic crises have become a dreadful problem for a general person and his family. In such a situation the women who are the powerful part of the society are providing the support to their families according to their physical, mental and economic capacities.

मुख्य शब्द : लॉक डाउन, महिलाओं की भूमिका।
Lock-down, Role of Women.

प्रस्तावना

यह सर्वविदित है कि महिलायें सामाजिक व्यवस्था का आधार–स्तम्भ होती हैं समाज को एक सूत्र में पिरोने का जो कार्य महिलायें कर सकती हैं उसका कोई दूसरा विकल्प नहीं है। उनकी इस योग्यता का आधार उनकी सहनशीलता, परिश्रम करने की क्षमता तथा अहम् का न होना है। वर्तमान में लॉक डाउन से उत्पन्न परिस्थितियों में महिलाओं ने अपनी नयी क्षमताओं का परिचय दिया है आर्थिक रूप से कार्यशील महिलाओं के साथ–साथ घरेलू महिलाओं ने भी यथासंभव यह प्रयास किया है कि इस आपदा के समय में उनके

परिवार एवं समाज को कोई कष्ट न हो। उनकी इस भूमिका का गहन विश्लेषण करने के लिये ही इस विषय को चुना गया है।

परिकल्पनायें

लॉक डाउन में महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करने का विचार करते समय अध्ययनकर्ता की निम्नलिखित परिकल्पनायें थी–

1. लॉक डाउन में महिलाओं की सामाजिक दशा में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है।
2. लॉक डाउन में महिलाओं को आर्थिक समस्याओं का सामना करना पडा।
3. लॉक डाउन में महिलाओं की शारीरिक व्यस्तता के साथ–साथ मानसिक व्यस्तता भी बढी है।
4. लॉक डाउन में महिलाओं को पुरूषों का अपेक्षित सहयोग नहीं मिला।
5. लॉक डाउन में आपदा के समय उत्पन्न समस्याओं को सामना करने से महिलाओं के आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है।

साहित्यावालोकन

किसी भी विषय का गहनतापूर्वक अध्ययन करके उसके सार्थक परिणाम निकालने के लिये उस विषय में इससे से पूर्व किये विद्वजनों के विचारों का अत्यधिक महत्व होता है किन्तु इस लेख में जिस विषय को चुना गया है वह सम्पूर्ण विश्व के लिये एक नया विषय है तथा सम्पूर्ण विश्व इस महामारी से बचने के विषय में ही विचार कर रहा है। परिणामतः इस लॉक डाउन में महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के वर्णन की ओर विद्वजनों का कोई विशेष ध्यान नहीं गया है किन्तु कुछ जर्नल्स एवं विभिन्न समाचार–पत्रों में कुछ विद्धानों ने इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। श्री राजेश्वर तिवारी जी ने इण्टरनेशनल जर्नल रिमार्किंग में अपने लेख इम्पैक्ट ऑफ कोविड–19 ऑन एम्पलॉयमेन्ट में कोविड–19 से उत्पन्न बेरोजगारी की समस्या को उजागर किया है। श्री हरी राम मीना जी ने इण्टरनेशनल जर्नल श्रृंखला में अपने लेख कोविड–19 महामारी का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव में स्पष्ट किया है कि लॉकडाउन में भारतीय अर्थव्यवस्था पर किस प्रकार दुष्प्रभाव पडा है। डॉ0 मनीष अग्रवाल, एसोसिएट प्रोफेसर ने अपने लेख में लॉक डाउन से उत्पन्न कुटीर एवं लघु उद्योंगो की समस्याओं का वर्णन किया है। तृप्ती शर्मा जी ने हिन्दुस्तान टाईम्स. कॉम में एक लेख में बताया है कि लॉक डाउन ने कामकाजी महिलाओं की समस्याओं को बढाया ही है एक ओर तो उन्हें पुरूष वर्ग का सहयोग नहीं मिला तथा दूसरी ओर वर्क एट होम की वजह से काम का दबाव अत्यधिक हो गया।

लॉक डाउन में महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का वर्णन

हम सभी जानते हैं कि आज हमारा देश ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व कोविड–19 की भयावह स्थिति से गुजर रहा है जिसके कारण सभी लोग किसी न किसी तरह इससे प्रभावित हुए हैं। समाज का एक अभिन्न अंग महिलायें जो कि हमारे समाज की प्रमुख आधार–स्तम्भ हैं, आपदा की इस स्थिति में उनकी भूमिका न केवल सामाजिक अपितु आर्थिक रूप से भी प्रभावित हुई है। सामाजिक रूप से तो प्राचीन काल से ही महिलायें समाज की धुरी रही हैं किन्तु पिछले लगभग चार दशकों में इन्होंने आर्थिक क्षेत्र में भी अपने महत्वपूर्ण योगदान से अर्थव्यवस्था को सुदृढ किया है। एक सर्वे में यह पाया गया है कि महिलायें शारीरिक रूप से भले ही पुरुषों से थोडी कम रही हों किन्तु यदि मानसिक दृढता की बात की जाये तो वें पुरुषों से काफी आगे हैं। यही मानसिक दृढता समाज के विकास का आधार है।

लॉक डाउन में महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का गहनतापूर्वक अध्ययन करने के लिये हमें महिलाओं को दो वर्गों में विभाजित करना होगा, एक घरेलू महिलायें तथा दूसरी कामकाजी महिलायें। घरेलू महिलाओं से तात्पर्य उन महिलाओं से है जो कि घर पर रहकर सिर्फ घर को देखती हैं तथा घर एवं समाज की आर्थिक व्यवस्था में उनका कोई प्रत्यक्ष योगदान नहीं होता तथा कामकाजी महिलायें वह होती हैं जो घर पर रहकर अथवा घर से बाहर निकलकर कुछ आर्थिक क्रियायें करती हैं तथा अपने घर की आर्थिक व्यवस्था में प्रत्यक्ष रूप से आर्थिक सहयोग प्रदान करती हैं। लॉक डाउन ने समाज के इन दोनों वर्गों की महिलाओं की भूमिका को अत्यधिक रूप से प्रभावित किया है। जहां एक ओर घरेलू महिलाओं को आर्थिक गतिविधियों से जुडना पडा वहीं दूसरी ओर, कामकाजी महिलाओं को घरेलू कार्यों में अपनी सक्रियता बढानी पडी है।

कोविड–19 ने घरेलू महिलाओं की जिम्मेदारियों को अधिक बढाया है क्योंकि परिवार के जो सदस्य पहले दिन भर बाहर रहते थे, अब वें 24 घंटे घर पर ही रह रहे हैं जिसके कारण उनके अतिरिक्त काम का भार घरेलू महिलाओं पर पड गया। यहां यह भी सत्य है कि उन्हें कुछ सहयोग भी मिला किन्तु प्रायः यही पाया गया है कि जहां कोविड–19 से पूर्व वह दिन भर में से कुछ समय अपने लिये निकाल पाती थी वहां अब कोई समय उनका अपना नहीं रह गया है। मध्यम वर्ग और उच्च वर्ग की महिलायें जो अपने घरेलू कार्यों की सहायता के लिये नौकर रख लेती थी परन्तु लॉकडाउन के कारण वे लोग भी अवकाश पर थे जिसके कारण घर के सभी कार्यों का बोझ उन पर आ गया लेकिन इस स्थिति में भी महिलाओं ने अपनी मानसिक एवं शारीरिक दृढता का परिचय देते हुए अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा किया।

लॉक डाउन में घरेलू महिलाओं की सामाजिक स्थिति

लॉक डाउन के प्रारम्भिक चरण में ही घरेलू महिलाओं को अपनी वास्तविक स्थिति का भान हो गया था कि अब उनके उत्तरदायित्वों में वृद्धि हो गयी है क्योंकि जहां वे सामान्य स्थिति में घरेलू कार्यों के साथ–साथ अपने व्यक्तिगत कार्यों के लिये भी कुछ समय निकाल पाती थीं वहीं इन बदली हुई परिस्थितियों में उनके लिये यह संभव नहीं रह गया है। यहां यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इन परिस्थितियों में उन्हें 24 घंटे में 48 घंटे जितना कार्य करना पड रहा है। घरेलू महिलाओं की सामाजिक स्थिति को निम्न बिन्दुओं के माध्यम से सरलतापूर्वक समझा जा सकता है–

1. कामकाजी पुरुष वर्ग जो कि दिन का अधिकांश समय अपने कार्यों के लिये घर से बाहर व्यतीत करते थे अब वें मजबूरी वश घर पर ही रह रहे हैं। एक ओर तो उन्हें अपनी आजीविका की चिन्ता तथा दूसरी ओर खालीपन का अहसास उनके स्वभाव को चिडचिडा बना रहा है जिसका परिणाम अन्ततः घरेलू महिलाओं को ही भुगतना पड रहा है और धीमे–धीमे जो बातें सामान्य थी वे भी घर–घर में कलह का कारण बनती जा रही हैं। इससे महिलायें शारीरिक थकान के साथ–साथ मानसिक तौर पर भी काफी परेशानी का अनुभव कर रही हैं फिर भी उन्होंने इन परिस्थितियों को समझा तथा अपनी मानसिक दृढता का परिचय देते हुए परिवार को बांधे रखा।
2. सामान्य दिनों में पुरुष वर्ग काम करता था तथा घर के आर्थिक क्रियाकलापों की चिन्ता महिलाओं की नहीं थी किन्तु लॉकडाअन में काम–धन्धे बंद होने के कारण शीघ्र ही अधिकांश पुरुषों की आय कम अथवा बंद हो गयी जिसके कारण आर्थिक समस्यायें उत्पन्न होने लगी। ऐसे समय में घरेलू महिलायें जो कि घर में प्रबन्धक की भूमिका निभाती रही हैं, उन्हें भी आगे आना पडा तथा घरेलू खर्चों में से बचाकर वर्षों से रखी गयी अपनी बचत को उन्होंने पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति में लगा दिया तथा इसके साथ ही उन्होंने घर के व्ययों को इस प्रकार समायोजित किया कि कम से कम व्ययों में घर की गाडी को चलाया जा सके। ये दूसरी बात है कि ऐसे समय में उनके त्याग एवं परीश्रम की जितनी सराहना की जानी चाहिये थी उतनी नहीं हुई तथा उनके इन क्रियाकलापों को उनका सामान्य व्यवहार मान लिया गया।
3. लाकॅ डाउन से पूर्व घर के बच्चों की पढाई की एक सुचारू व्यवस्था बनी हुई थी। बच्चे प्रातः से लेकर दोपहर तक अपने–अपने विद्यालय अथवा कॉलेज जाते थे तथा दोपहर के पश्चात् कोंचिग अथवा ट्यूशन में पढते थे। बच्चों को पढाने का उत्तरदायित्व घर की महिलाओं पर होता अवश्य था किन्तु बहुत अल्प समय के लिये। किन्तु लॉक डाउन में मुख्यतः छोटी कक्षा से 10वीं कक्षा तक के बच्चों को पढाने का कार्य उनके मुख्य कार्यों में से एक हो गया क्योंकि एक ओर स्कूल बंद हो गये तो दूसरी ओर कोंचिग संस्थान भी अपना कार्य नहीं कर पाये। अब उन्हें पढाने की मुख्य जिम्मेदारी भी महिलाओं को निभानी पड रही हैं। उन्हें ऑन लाईन कक्षाओं के चलते ऑन लाईन कक्षायें लेने वाले अध्यापकों के साथ भी अपने समय का सामंजस्य बैठाना पड रहा है और यह सांमजस्य कहीं न कहीं उनके अन्य कार्यों को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर रहा है। लेकिन वर्तमान समय में पढाई की इस प्रतियोगिता को देखते हुए महिलायें इस उत्तरदायित्व का भी पूर्ण मनोयोग से निर्वाह कर रही हैं और बच्चों को पढाई का वातावरण प्रदान कर रही हैं। इस व्यवस्था को बनाये रखने में बहुत कम घरों में पुरुष वर्ग का भी अपेक्षित सहयोग उन्हें मिल रहा है।
4. अधिकांश भारतीय परिवार सामूहिक रूप से ही रहते हैं जिसमें बुजुर्ग लोग, कुछ ऐसे सदस्य जो शारीरिक रूप से भी असक्षम होते हैं, भी होते हैं। लॉक डाउन से पूर्व सामान्य परिस्थितियों में घर के इस प्रकार के सदस्य अपना कुछ समय इधर–उधर भी बिता लेते थे जिससे उनका मन लगा रहता था किन्तु लॉक डाउन की अवधि में घर से बाहर निकलने पर पांबदी हो गई जिसके कारण उन्हें अपना समय बाहर व्यतीत करने की सुविधा भी नहीं रही तथा उन्हें घर पर ही रहना पडा। जहां बडे घर हैं वहां तो फिर भी अधिक समस्या नहीं आयी किन्तु एक सामान्य मध्यमवर्गीय परिवार में महिलाओं को इन परिस्थितियों के साथ भी सांमजस्य बैठाना पड रहा है। जहां एक ओर उन्हें इस प्रकार के सदस्यों के मान–सम्मान को बनाये रखते हुए उनकी सुविधाओं का ध्यान रखना पडता है वहीं दूसरी ओर घर की अन्य व्यवस्थायें सुचारू रूप से चलती रहें इसका भी उन्हें ध्यान रखना होता है। ऐसी परिस्थिति में कभी–कभी ऐसे अवसर भी आते हैं कि उनके पास कुछ समस्याओं के समाधान नहीं होते। ऐसे समय में उन्हें अपनी निजी सुविधाओं का ही बलिदान करना पडता है। लॉक डाउन में घेरलू महिलाओं की सामाजिक स्थिति के विश्लेषण से यह तो निश्चित है कि उनका सामान्य जीवन प्रभावित हुआ है लेकिन ऐसा भी नहीं है कि यह नकारात्मक रूप से ही प्रभावित हुआ हो। इसमें कई बातें सकारात्मक भी हुई हैं, जैसे कि सामान्य दशाओं में महिलाएं अपनी व्यस्तता की वजह से अनेकों अपने इच्छित काम नहीं कर पाती थी अब थोडा–बहुत उसमें भी आगे बढी है। उदाहरण के लिये मैं अपने आप को ही देखती हूँ कि मैं अध्ययन के क्षेत्र में कुछ करना चाहती थी जो कि समयाभाव के कारण संभव नहीं हो पा रहा था किन्तु अब समय मिला तथा परिवार का सहयोग मिला तो मैंने यह लेख तैयार करने का प्रयास किया। इसके अतिरिक्त घर के सदस्यों का सहयोग भी प्राप्त होता रहा है। जिन लोगों से आप ने वर्षों से बातें नहीं की, मोबाईल पर ही सही उनसे बातें होने लगी अर्थात् लॉक डाउन का घरेलू महिलाओं पर केवल नकारात्मक प्रभाव ही नहीं पडा अपितु यदि सकारात्मक दृष्टि से देखा जाये तो इसके कुछ पहलू अच्छे भी रहे हैं, जैसे कि अपव्ययता में कमी आयी है तथा पैसे की कीमत एवं घरेलू बचतों का महत्व परिवार के प्रत्येक सदस्य की समझ में आ गया है।

लॉक डाउन में कामकाजी महिलाओं की आर्थिक स्थिति

कामकाजी महिलाओं की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करने के लिये इन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता हैः एक निम्न वर्ग की कामकाजी महिलायें जो कि बहुत छोटे स्तर पर घर पर रहकर अथवा दूसरों के घरों, कारखानों में जाकर मजदूरी जैसे कार्य करती हैं। दूसरे वर्ग में वे महिलायें आती हैं जो कि मध्यम वर्ग की होती हैं अर्थात् वे किसी गैर–सरकारी ऑफिस इत्यादि में जाकर साधारण पदों पर कार्य करती हैं तथा तीसरे वर्ग मे वें महिलायें होती हैं जो कि उच्च वर्ग में आती हैं तथा

किसी सरकारी ऑफिस में अथवा किसी प्राइवेट संस्थान में उच्च पद पर कार्यरत् होती हैं। कार्यशील महिलाओं को विभिन्न वर्गों में विभक्त करना इसलिये आवश्यक हो जाता है कि लॉक डाउन में उपरोक्त तीनों ही वर्गों की महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर अलग–अलग प्रभाव पडा है। जिसे निम्न बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है–

1. निम्न वर्ग की महिलाओं के विषय में बात की जाये तो इस वर्ग की अधिकांश महिलाओं को लॉक डाउन में प्रारम्भ के लगभग दो माह में इन्हें कोई विशेष अन्तर नहीं पडा क्योंकि माननीय प्रधानमंत्री जी के आव्हान पर जहां भी ये महिलायें कार्यरत् थी वहां इन्हें घर बैठे ही वेतन मिलता रहा तथा सरकार एवं विभिन्न संस्थानों द्वारा समय–समय पर इन्हें खाद्य सामग्री उपलब्ध करायी जाती रही। इसी वर्ग में कुछ महिलायें ऐसी भी थी जो घर पर रहकर अपना छोटा–मोटा रोजगार करती थी। ऐसी दशा में उन्हें आर्थिक रूप से काफी परेशानी का सामना करना पडा लेकिन सरकार द्वारा जो भी सहायता मिल रही थी उन्होंने उसका उपयोग कर अपना जीवनयापन किया। लेकिन लॉक डाउन के लगभग दो माह पश्चात् इस वर्ग की लगभग सभी महिलाओं को आर्थिक परेशानी होने लगी क्योंकि ये जहां काम करती थी उनकी भी आय के साधन नहीं थे तथा वें भी अतिरिक्त आर्थिक भार उठाने में सक्षम नहीं रहे।
2. मध्यम वर्गीय महिलायें जो कि गैर–सरकारी संस्थानों में कार्यरत् हैं उन पर लॉक डाउन का सर्वाधिक प्रभाव देखने में आया। अधिकांशतः जहां वे कार्यरत् हैं वहां से लॉक डाउन की अवधि में उन्हें कोई आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं हुई और यदि हुई भी तो वह उनके वेतन की तुलना में बहुत ही कम रही। इस वर्ग की महिलाओं के साथ एक समस्या यह भी है कि वे अपने सामाजिक स्तर के आधार पर सरकार एवं निजी संस्थाओं द्वारा जो सहायता प्रदान की जा रही है संकोचवश वह भी नहीं ले पा रही हैं जिसके कारण इन्हें आर्थिक समस्याओं का सामना तो करना पडा ही साथ ही घर की जिम्मेदारियों का जो दायित्व इन पर था उसे भी घरेलू महिलाओं की तरह इन्हें पूरी तरह से निर्वहन करना पड रहा है।
3. उच्च वर्गीय महिलायें जो कि सरकारी संस्थान अथवा प्राइवेट संस्थान पर उच्च पदों पर कार्यरत् हैं लॉक डाउन में उन पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पडा क्योंकि आर्थिक रूप से तो वे समर्थ थी ही साथ ही वर्क एट होम की कल्चर की वजह से उनका आफिस का कार्य भी प्रभावित नहीं हुआ। हाँ लॉक डाउन की स्थिति में वे घर पर रही तथा घर पर काम करने वाले कर्मचारियों के न आने के कारण उन्हें घर के कार्यों में भी लगना पडा। इस प्रकार की दशा में उनका पूरा परिवार मिलजुलकर घरेलू कार्य कर लेता है तथा लॉक डाउन जैसी स्थिति जो कि किसी भी सामान्य व्यक्ति के लिये भयावह कही जा सकती है इस समय को भी ये एक सुनहरे अवसर के रूप में उपयोग कर रही हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि लॉकडाउन में मनुष्य के जीवन के कई रंग देखने को मिले। कई जगह लोगों ने आपदा को अवसर में बदल लिया तो कई जगह लोग निराशा के अंधकार में खो गये। कई परिवारों में विघटन की स्थिति उत्पन्न हो गई तो कई परिवारों में पुराने सबंधों में नयापन आ गया। इन दिनों उच्च वर्ग विशेष में आत्महत्या जैसी कहीं दुःखद घटनायें भी हुई जो कि इस बात की ओर संकेत करती हैं हमारे समाज का ऐसा वर्ग भी है जो कि झूठी दिखावेबाजी में आकर अपनी जीवन–शैली और आर्थिक आधार को इतना खोखला कर लेता है कि वह अचानक आयी आपदा का कुछ समय भी सामना नहीं कर पाता। ये निश्चित है कि आपदा आयी है तो जायेगी भी अवश्य ही। महत्वपूर्ण यह है कि इस प्रकार की आपदाओं का सामना कौन कितनी जीवटता से करता है। अगर समाचार पत्रों के आधार पर कुछ पिछले आंकडे उठाकर देखे जायें तो इस आपदा में आत्महत्या करने वाले पुरुषों की संख्या महिलाओं की तुलना में बहुत अधिक रही है जबकि समस्या दोनों के साथ एक सी ही थी। यही बात दर्शाती है कि महिलायें शारीरिक रूप से भले ही पुरुषों से कुछ कमजोर हों लेकिन अपनी मानसिक दृढता के कारण वे समस्याओं से निकलकर पुनः अपनी पूर्व एवं सुखद स्थिति में आ जाती है।

निष्कर्ष

लॉक डाउन में महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक दशा के विश्लेषण के पश्चात् कहा जा सकता है कि महिलाओं में वह शक्ति विद्यमान होती है कि वें किसी भी प्रकार की स्थिति में स्वयं को शीघ्र ही ढाल लेती हैं। दशा यदि सुखद है तो अपने पूरे परिवार के साथ वे उसे बांटती हैं लेकिन यदि कोई समस्या या आपदा की स्थिति हो तो वें उनसे उत्पन्न कष्टों को अधिकांशतः अपने ऊपर लेने का प्रयास करती हैं। इस लॉक डाउन में भी महिलाओं ने अपनी सकारात्मक भूमिका से स्थिति को सामान्य बनाने का प्रयास किया है जिसमें वें काफी हद तक सफल भी रही है। इस आपदा का एक पहलू यह भी सामने आया कि पुरुष वर्ग को अहसास हो गया कि वें सिर्फ मकान बना सकते हैं उसे घर का रूप महिलायें ही देती हैं। दूसरी ओर महिलाओं को भी अहसास हुआ कि कि पुरुष वर्ग पर भी घर के बाहर काम का कितना दबाव रहता है तथा वर्क एट होम की कल्चर से उन्हें पता चला कि जिस प्रकार घर चलाने के लिये वे जी तोड मेहनत करती हैं उसी घर को खडा करने के लिये पुरुष वर्ग दिन–रात की चिन्ता किये बिना सिर्फ काम करते हैं। दोनों पक्षों ने एक दूसरे के परिश्रम और त्याग को पहचाना। लॉक डाअन की आपदा तो वर्तमान में है जो कि भविष्य में समाप्त हो ही जायेगी किन्तु एक–दूसरे के काम के प्रति सम्मान की जो भावना पैदा हुई है वह हमेशा बनी रहेगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *International Journal- Remarking an Analisation Vol-V Issue-II, May 2020*
2. *International Journal- श्रृंखला एक शोधपरक विचारिका पत्रिका Vol-VII, April 2020*
3. *Navbhart Times.Com, 1 April, 2020*
4. *राष्ट्रीय समाचार पत्र अमर उजाला*
5. *राष्ट्रीय समाचार पत्र दैनिक जागरण*
6. *राष्ट्रीय समाचार पत्र हिन्दुस्तान*